The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 3, Issue 1 - 2019

हिन्दी का प्रवासी साहित्य-एक विहंगम दृष्टि

डॉ वृंदा विजयन

हिन्दी साहित्य रूपी विशाल वटवृक्ष के असंख्य समृद्ध एवं सशक्त शाखाओं में से एक है प्रवासी साहित्य। आज प्रवासी साहित्य दिन- प्रतिदिन अपनी रचनाधर्मिता के ज़रिए हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाता जा रहा है। इस संदर्भ में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि प्रवासी साहित्य हिन्दी साहित्य क्षेत्र को सघन बनानेवाली एक सशक्त विधा या नई चेतना है, जो प्रवासी लोगों के मनोविज्ञान से भी संबन्ध रखती है। प्रवासी साहित्य असल में एक नई अंतर्दृष्टि है, जो पर्याप्त समय लगाकर पाठकों के दिल एवं साहित्य के क्षेत्र में खुद का एक अक्षुण्ण स्थान बनाने में बेहद कामयाब हुई है। साहित्य की यह विधा आज ज़रूर अपनी संवैधानिक रचनाधर्मिता के ज़रिए बडी गहराई से अपनी जडें जमा चुकी हैं।

साहित्य असल में उसी भाषा में लिखा जाता है, जिस भाषा के संस्कार सर्जक को प्राप्त होते हैं। प्रवासी साहित्यकार अपनी रचनाओं के ज़रिए अपने देश, उसके संस्कार, उसके मूल्य,सभी से अपना आंतरिक संबन्ध बनाए रखना चाहते हैं। प्रवास-जीवन के दुख-दर्द की अभिव्यक्ति के साथ-साथ अपने देश के संस्कारों को जोडकर ज़िन्दगी से जुडे यथार्थ को भावना की ओट लगाकर पेश करने को ही वास्तव में प्रवासी साहित्य कहते हैं । अपनी ऐसी दिलकश अभिव्यक्ति द्वारा प्रवासी साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को आगे बढाया है,उसके ज़रिए एक और महत्वपूर्ण कार्य भी संभव हो रहा है। वह है देश-विदेश के संस्कारों,संस्कृतियों, मूल्यों और एक हद तक आचारानुष्ठानों के समन्वय का सराहनीय काम। एक अन्य सराहनीय कार्य भी इनके ज़रिए संपन्न हो रहा है,वह है नवीन संस्कृति, नई पीढ़ी, उसका रहन-सहन इत्यादि नए-नए कार्यकलापों के बारे में पाठकों को अवगत कराना। ऐसे अनगिनत खासीयत के कारण इन लेखकों से यह अपेक्षा की जाती है कि अपनी रचनाओं के माध्यम से वे एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण बरकरार रखें। समन्वय हमेशा साहित्य का महत्वपूर्ण गुण रहा है, और यही अब प्रवासी साहित्य का भी सर्वोच्च गुण है।

प्रवासी साहित्य नोस्टाल्जिया के रचनात्मक रूपों का समुच्चय है। श्री राजेन्द्र यादव के अनुसार- "संस्कृतियों के संगम की खूबसूरत कथाएँ प्रवासी साहित्य। प्रस्तुत साहित्य के तीन चरण माने जाते हैं। पहला- नोस्टाल्जिया या परायेपन की अनुभूति है। दूसरा है-ऐसे अनुभूतियों से उभरे मानवीय संघर्ष। तीसरा चरण है- अपनी एक नई पहचान को स्थापित करने की अदम्य झटपटाहट। इन तीनों चरणों से गुज़रते हुए साहित्यकार हमें सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों, और खान-पान, पहनावा, भाषा, पर्व-त्योहार आदि से पाठकों को परिचित कराता है। प्रवासी साहित्य में प्राय: सभी विधाओं में रचनाएँ संभव हुई हैं, परन्तु सबसे ज़्यादा विमर्श कहानी विधा पर ही संभव हुआ है।

भारतीय मूल के विदेशों में रहनेवाले लोगों के हिन्दी को माध्यम बनाकर किए गए सृजनात्मक लेखन को प्रवासी हिन्दी साहित्य कहते हैं। यह असल में मानव-जीवन के गतिशील एवं क्रियात्मक रूप का रूपान्तरण ही है।क्योंकि इसका किसी विशेष चिन्तन या दर्शन से जुडाव नहीं है, बल्कि मानवीय जीवन के भोगे हुए यथार्थ एवं मानसिक व्यथा का वर्णन है। अधिकतर प्रवासी साहित्यकार इंग्लैंड,कनेडा,और मौरीशस से हैं, लेकिन अमरीका,थाइलैंड, जर्मनी जैसे

*सहप्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, कोचिन कॉलेज (सेल्फ फाइनेंसिंग), कोच्चि -2
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**

देशों से भी लोगों ने प्रस्तुत साहित्य को संपन्न किया है। वास्तव में वे अपने मूल से जुडने के कार्य को पूर्णता दे रहे हैं।

डॉ. रामदरश मिश्र के अनुसार- "प्रवासी साहित्य ने हिन्दी को एक नई ज़मीन दी है और हमारे साहित्य का दायरा दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श की तरह विस्तृत किया है।" मृदुला गर्ग की राय में "प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने के बजाय उसे हिन्दी की मुख्य धारा में स्थान दिया जाय।"प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों ने अपने सृजन के ज़रिए मिथक, इतिहास, सभ्यता और संस्कृति आदि को जीवन्त रखा, और अब भी यह प्रक्रिया ज़ारी है।

आज प्रवासी साहित्यकार ब्रिटेन, अमरीका, कैनेडा,गुयाना, मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि स्थानों को अपनी कर्मभूमि चुनकर सृजनप्रक्रिया में कार्यरत है। विगत समय के प्रवासी समाज की तुलना में वर्तमान समय की पीढी एक अजीब कशमकश में जी रहे हैं। वर्तमान प्रवासी पीढी के इस सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक तनाव से उत्पन्न इस खोखलेपन की अभिव्यक्ति भी प्रवासी साहित्य सृजन का आधार बन रही है।

प्रमुख प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में प्रमुख नाम है, हरिशंकर आदेश का। उनकी लगभग 300 से अधिक रचनाएँ उपलब्ध है। वे 1966 से 1976 तक वेस्टइन्डीस में भारतीय उच्चायुक्त के रूप मे कार्यरत रहे। वहाँ उन्होंने "भारतीय विद्यासंस्थान" की स्थापना की। उनके द्वारा महाकाव्य, खण्डकाव्य, भगवत् गीता का हिन्दी और अंग्रेज़ी पद्यानुवाद, 30 नाटक, इत्यादि प्रकाशित हुए हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में प्रवासी भारतीय साहित्यकारों में हरिशंकर आदेश का नाम अग्रणी है। वे विश्व कवि, महाकवि, प्रवासी भारतीय साहित्यकार सम्मान आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य को आगे बढाने का श्रेय मॉरिशस के अभिमन्यु अनंत, डॉ. हेमराज सुंदर,रामदेव, धुरंधर, राज हीरामन, इन्द्र देव भोला, सूर्यदेव सीबोरत आदि को जाता है। अभिमन्यु अनंत को प्रवासी साहित्य का कहानी सम्राट माना जाता है। इसी तरह उमेश अग्निहोत्री, लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, जैसै अनेक साहित्यकारों का योगदान स्मरणीय है। ये साहित्यकार सिर्फ हिंदी भाषा को ही नहीं समृद्ध कर रहे हैं, बल्कि हमारी संस्कृति व परंपराओं की संवाहिका का उत्तरदायित्व भी बखूबी निभा रहे हैं। हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान महत्वपूर्ण हैं। विगत समय के प्रवासी समाज की तुलना में वर्तमान प्रवासी समाज एक अजीब कशमकश में जी रहा है। प्रवास में बसे भारतीयों की नई पीढी के आधुनिक समय की सांस्कृतिक, सामाजिक, और पारिवारिक तनाव से उत्पन्न खोखलेपन की अभिव्यक्ति आज प्रवासी साहित्य सृजन का आधार बन रही है। इसका नमूना उषा राजे सक्सेना के ये शब्द है- कभी व्यक्ति खुद को थाली का बैंगन समझता है, तो कभी धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का। नये परिवेश में अमित सुखों के बीच रहते हुए भी वह पलटपलटकर पीछे की ओर देखता है, जहाँ से वह आया है। आज स्थिति ऐसी है कि मॉरिशस, अमेरिका, इंग्लैंड जैसे देशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या सबसे ज़्यादा है। अत: इन देशों में हिन्दी लेखकों की संख्या भी सबसे अधिक है। इन लेखकों में से कुछ लेखक ऐसे हैं जिन्हें महज़ भारतीय ही नहीं बल्कि वैश्विक हिन्दी मंच पर भी सम्मामित किया जाता है। ऐसे लेखकों के पाठकों की संख्या हिन्दी के किसी लोकप्रिय लेखक के पाठकों से कम नहीं है।

हिन्दी के बाकी सभी विधाओं की तरह प्रवासी साहित्य में भी महिला साहित्यकारों की तादाद कम नहीं है। यह कहा जी सकता है कि एक परिघटना के रूप में यह साफ दिखाई देता है कि पूरे प्रवासी साहित्य की बागडौर स्त्री रचनाकारों के हाथ में है। प्रवासी महिला लेखकों में उल्लेखनीय नाम उषा राजे सक्सेना का है, जो इंग्लैंड को कर्मभूमि बनाकर सृजन कार्य कररही हैं। इनके साहित्य में भारत, भारतीय संस्कृति, एवं सभ्यता के प्रति विचार प्रकट किये गये हैं। इन्होंने अपने समय तथा समाज की विडम्बना और यथार्थ को अपने लेखन द्वारा अभिव्यक्ति दी है। अगला नाम अलका शर्मा का

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

आता है, जो वॉइस ऑफ अमेरिका में एवं बीबीसी के हिन्दी सेवा का अध्यक्ष के रूप में कार्य कर चुकी हैं। इनके लेखन में प्रवासी भारतीय समाज की संवेदना की अभिव्यंजना है। अगला नाम अर्चना पैन्यूली का आता है, जो डेन्मार्क से हैं। ये अनुवादक भी है । अगला नाम अनिलकुमार प्रभा का है, जो न्यूजर्सी में हिन्दी की प्राध्यापिका है। इनके लेखन की विशेषता स्त्री की महत्वाकांक्षा, और नारी की त्रासदी का अंकन है।

अगला नाम इला प्रसाद का आता है, जिन्होंने इला नरेन के नाम से रचनाऐं की है। ठीक इसी तरह सुषम बेदी , सुधा ओम ढींगरा, ज़किया जुबैरी, नीना पॉल, दिव्या माथुर, उषा वर्मा, जय वर्मा जैसी लेखिकाओं ने भी अपनी सृजन-प्रक्रिया के ज़रिए हिन्दी के प्रवासी साहित्य को समृद्ध बनाया है। एक भारतीय की नज़रिए से प्रवासी जीवन के यथार्थ को देखते -परखते हुए इन साहित्यकारों ने बहुत सी सूक्ष्म घटनाओं का और गतिविधियों का मार्मिक ब्योरा दिया है। इसमें वेश्यावृत्ति, शराबखोरी,ड्रग पैडलैर्स आदि सब शामिल है। निस्संदेह यह कह सकते हैं कि इन महिला लेखिकाओं ने भी प्रवासी भारतीय साहित्य का बागडोर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर अत्यन्त कुशलता से संभाला है। आशा है कि प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन की परंपरा अनेक सालों तक ऐसी ही कायम रहे, ताकि आगामी समय की नई युवापीढी को प्रवास-जीवन से संवन्धीसमस्त जानकारी आसानी से प्राप्त हो सके, और भारतवासी होने पर गर्व को सदा अपना सृजन-प्रक्रिया के ज़रिए महसूस कर सकें, साथ ही खुद को एक प्रवासी साहित्यकार के रूप को साकार करते रहे।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि प्रवासी साहित्य और संस्कृति का अभिन्न संबन्ध है। प्रवासी साहित्य ने भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज भारतीय हिन्दी साहित्य की मुख्य विधा के रूप में प्रवासी हिन्दी साहित्य विकसित हो रही है। यह साहित्य विदेशों में भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के वर्चस्व को समृद्ध कर रहा है। भले ही यह विदेशों में लिखे जा रहे हैं, पर बेशक यह पूर्ण रूप से भारत से जुडे हुए हैं प्रवासी हिन्दी साहित्य में विदेसी संस्कृति में अपने अस्तित्व को बचाए रखने की चुनौती का सामना ये साहित्यकार कर रहे हैं, और एक हद तक अपने इस कोशिश में पूर्ण सफलता भी प्राप्त कर रहे हैं।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**